दृष्टि *The vision*

Test Series–2008

Dated : 6th Sept., 2008

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र-II

Time Allowed : Three Hours | **Maximum Marks : 300**

(i) *प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिएँ जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। प्रवेश-पत्र पर उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।*

(ii) *प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं। बाकी प्रश्नों में से प्रत्येक खण्ड से कम से कम 'एक' प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

(iii) *सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड "क"

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं तीन की व्याख्या करो। पद्यांशगत सौंदर्य-स्थलों का अनावरण भी कीजिए- 20x3=60

(क) "सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार॥
गूँगा हूवा बावला, बहरा हूवा कान।
पाऊँ थै पंगुल भया, सतगुरु मारा बान॥"

(ख) "मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित-दुति होइ॥"
"तो पर वारौं उरबसी, सुनि, राधिके सुजान।
तू मोहन कैं उर बसी ह्वै उरबसी-समान॥"

(ग) "कर रही लीलामय आनंद–महाचिति सजग हुई-सी व्यक्त,
विश्व का उन्मीलन अभिराम–इसी में सब होते अनुरक्त।
काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।"

(घ) "कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास,
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।"

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

2. 'सूर ने जिस क्षेत्र को चुना है, उसके वे सम्राट हैं'– इस कथन के आधार पर भ्रमरगीत में व्यक्त प्रेम भावना का मूल्यांकन करें। 60

3. "राम की शक्ति पूजा' 'राम' की नहीं, 'निराला' की शक्ति पूजा है"–क्या आप इस कथन से सहमत हैं? चर्चा करें। 60

4. 'असाध्यवीणा' के माध्यम से अज्ञेय क्या कहना चाहते हैं? सोदाहरण बताएँ। 60

खण्ड "ख"

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखें। 20x2=60

(क) "मुझे अपने पर विश्वास नहीं था। मैं नहीं जानता था कि अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के बाद प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैं कैसा अनुभव करूँगा। मन में कहीं यह आशंका थी कि यह वातावरण मुझे छल लेगा और मेरे जीवन की दिशा बदल देगा... और यह आशंका निराधार नहीं थी।"

(ख) "मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निस्सन्देह कला का उद्देश्य सौन्दर्य-वृत्ति की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनन्द की कुंजी है, पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनन्द नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो। आनन्द स्वतः एक उपयोगिता-युक्त वस्तु है और उपयोगिता की दृष्टि से एक ही वस्तु से हमें सुख भी होता है, और दुःख भी।"

(ग) "मेरे लिये राजनीति धर्मनीति से कम नहीं। इस राह पर मेरे साथ चलना है तो गीता का उपदेश गाँठ बाँध लो–निष्ठा से अपना कर्तव्य किये जाओ, बस। फल पर दृष्टि ही मत रखो।"

(घ) "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं।"

6. "गोदान हिन्दी उपन्यास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है।" चर्चा करें। 60

7. स्कंदगुप्त 'इतिहास' नहीं, 'वर्तमान' की चिंता का नाटक है। स्पष्ट करें। 60

8. 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य शुक्ल की काव्यशास्त्रीय विचारधारा तथा निबंध कौशल की विशेषताएँ स्पष्ट करें। 60

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

श्वेता सिंघल (17वाँ स्थान), I.A.S.-2008

(R)

दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) 1

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

186

नाम (Name) Shweta Singhal विषय (Subject) Hindi-II तिथि (Date) 6/9/08

पता (Address) फोन नंबर (मोबाइल)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति पूजा' निराला की लोकप्रिय कृति है जिसके केन्द्र में मानव मन की अपराजेय संघर्ष शक्ति है जिसे लगातार संघर्ष के बाद विजयश्री प्राप्त होती है। अपने पूरे स्वरूप में 'राम की शक्ति पूजा' एक क्लासिक्ल काव्य रचना है। यह संश्लेषणात्मक काव्य शिल्प, शैली, शब्द योजना तथा उदात्त प्रस्फुटित अर्थ में भी झलकित होता है।

'राम की शक्ति पूजा' अपने समय के संघर्षों से निर्मित व्यक्ति जीवन के द्वन्द्व को अभिव्यक्त करती है जिसमें कई अर्थ एक साथ संगुम्फित होकर सामने आए हैं। यह काव्य कुछ [illegible] तत्कालीन संदर्भों में:-

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष जो राम के संघर्ष में व्यक्त करती सी प्रतीत होती है तो देशकाल से परे असत्य एवं अन्याय पर सत्य एवं न्याय की जीत की पताका फैराती है। पर कहीं-न-कहीं यह निराला के जीवन का आत्मचित्रण भी है। राम के संघर्ष के, उनकी आशा-निराशा, उनकी आराधना के माध्यम से निराला ने अपने जीवन की पराजय, आशा-निराशा और संघर्ष चेतना को ही व्यक्त किया है।

कविता का आरम्भ राम की पराजय के साथ होता है। आज

'रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर' -

आज का - -

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अ! आज के युग में स्वयं महाशक्ति को आशीर्वाद : रावण को प्राप्त था जो रावण को अपने अंक में लिए हुए, राम के सभी मंत्रपूत बाणों को निरस्त करती जा रही थी, ज्यों ही राम युद्ध में प्रवृत्त होते त्यों ही महाशक्ति की सम्मोहन शक्ति से वे विवश हो जाते।

~~सन्ताप के कवि~~

वे हारे हुए राम 'निराला' ही हैं जो जीवन के समर में हार गए थे। सारा जीवन काव्य साधना की किन्तु साहित्य क्षेत्र में आलोचकों के क्रोध भाजन बने रहे। आजीविका का प्रश्न सृजनात्मकता के प्रश्न से सदैव टकराता रहा। परम प्रिया मनोहरा जी का स्वर्गवास हो गया। छोटी सी आयु में बेटी सरोज का निधन हो गया। 'निराला' खुद को धिक्कार

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

कह या गए –

'हाय, मैं धिक् निरर्थक था – –'

जो पिता निराला यहाँ पति राम अपनी पत्नी को रावण के क्रोध से बचा नहीं पाते –

'हाय! जानकी उद्धार प्रिया का हो न सका
कह वह दृढ़तर हो गए नयन।'

राम की आँखों में बार-बार आँसू आते हैं, राम को जानकी के उद्धार न हो सकने के ताप के साथ-साथ एक और ध्यान रहा है कि यदि रावण विजित हुआ तो जग-विश्व आक्रांत होगा। यदि धन्या करती कर्म निरर्थक हुआ तो काव्य रोग, साहित्य स्रोत चाटुकारों की सम्पत्ति बन जाएगा।

राम निराला हैं निराला भी निराला हैं 'सरोज स्मृति' के बाद कोई कर्म से विरत हैं।

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष –011-27684128, 0-9313986616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com
Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

तभी जाम्बवंत आते हैं - राम को प्रबोधन देते हैं ; राम दुखी हैं - अन्याय जीतता है-; उधर शक्ति - ' -

तथा

किन्तु नहीं जो सदा पाता है आया विरोध किन्तु साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध '

जाम्बवंत ऐसे समय में राम को प्रबोधन देते हैं तथा रास्ता दिखाते हैं। रावण ने विजयश्री शक्ति की आराधना से प्राप्त की है राम को भी वैसा ही करना होगा, शक्ति की मौलिक कल्पना करनी होगी -

आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन

रावण अधर्मरत ० होकर भी कर सका त्रस्त

तब तुम तो निश्चय हो कर सकोगे उसे ध्वस्त '

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष -011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316395 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com
Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

घिरे हुए निराला का जब स्वयं को प्रोजेक्ट करके आगे बढ़ते हैं :-

'एक और मन रहा राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य ; नहीं जानता विनय'

और शक्ति की मौलिक कल्पना करते हैं। परम्परागत रूप से अंतर्पक्ष बाला राम ने जिन्हें प्राप्त किया है वे सब आज की शक्ति सम्पन्न अन्याय की व्यवस्था में लेकर हो चुके हैं। जबकि इसी 'राम की शक्ति पूजा' में निराला राम के माध्यम से एक नवीन काव्य शिल्प, एक मौलिक कल्पना लेकर आते हैं। अन्याय के विरुद्ध शक्ति संघर्ष, राम का स्वरूप एक नवीन चित्र और शिल्प की दृष्टि से एक नया

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयोग। कविता का आरम्भ शुरु की पूर्वदीप्ति के साथ होता है जहाँ चन्द सामाजिक पंक्तियों में कुछ को पुनर्जीवित कर दिया गया है। इतने संश्लिष्ट बिम्ब योजना के बाद कविता में वैराग्य आता है राम की निराशा एवं चिन्ता फिर श्रृंगार का मधुमय प्रसंग पूर्वदीप्ति ~~के~~ के रूप में उपस्थित होता है। इस प्रकार पूरी कविता में शिल्प, भाव एवं अर्थ की इतनी संश्लिष्ट रसास्वादन उत्पन्न होता है कि पाठक अभिभूत हो उठता है। समाज के, व्यक्ति के भीतर के द्वन्द, उनका ~~अपना~~ जीवन का प्रति सभी मानो एक साथ साकार हो उठता है और पाठक एक लम्बी कविता के माध्यम से महाकाव्योचित काव्य रस एवं औदात्य से ओत-प्रोत हो कर —

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

साधारणीकरण के उच्च अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं। राम शक्ति की पूजा करते हैं युद्ध से विराम लेकर — आत्म साक्षात्कार, आत्म बोधन द्वारा अपने भीतर छिपी अपार शक्ति की आराधना करते हैं। ~~सम्मिलित~~ और शक्ति की मौलिक आराधना करता है। और निराला विजयश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

'होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन कहकर महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

निराला की भी इस आराधना का स्वर मिलता है। और राम की शक्ति पूजा' जैसी महती कृति साहित्याकाश में इस की भांति प्रकाशित होती है।

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

तथा [illegible] की एक स्वर्णिम प्राप्ति बन जाती है। राम की शक्ति पूजा एक असाधारण कृति बन जाती है जो इस व्याप्ति में अपूर्व संघर्ष चेतना का सृजन करती है, दूसरी ओर उसकी [illegible] योजना, सांस्कृतिक बिम्ब योजना काव्य रसास्वादन की उच्च भूमि पर पाठक को ले जाती है। वस्तुतः सन निराला का पुत्री एवं पत्नी की मृत्यु के बाद रचा हुआ काव्य संघर्ष एक नवीन ओजस्विता के साथ 'राम की शक्ति पूजा' के रूप में प्रस्फुटित होता है जो निराला के कवि के संघर्ष को बयां भी है।

3/6 good

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(c) 'गोदान हिन्दी उपन्यास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है।' चर्चा करें।

गोदान हिन्दी साहित्य की महती कृति है जो न केवल अपने समय की सच्चाइयों से जूझती है अपितु आने वाले समय की परिस्थितियों का भी संकेत देती है। भारत के राष्ट्रीय जीवन में, की प्राणधारा 'किसानी जीवन' के संघर्ष से साक्षात्कार कराती है वहीं मानव के प्रश्नों के प्रति मनुष्य की चेतना को आंदोलित करती है, समाधान भी प्रस्तुत करती है। यह यथार्थवादी परिस्थितियों से जूझती कृति है जो वास्तव में हिन्दी की उपन्यास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी।

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द से पूर्व हिन्दी उपन्यासों में जासूसी, एवं रोमांचक कार्यों का बाहुल्य एवं प्राधान्य था जहाँ घटना महत्वपूर्ण होती थी तथा वह मनोरंजन के शुद्ध उद्देश्य से गढ़ी जाती थी। वहाँ अय्यारी, तिलिस्म आदि घटनाओं को वरीयता दी जाती थी। इसकी ओर इनमें देवकीनन्दन खत्री जैसे लेखकों को काफी महत्ता प्राप्त हुई। वहीं इतर और जासूसी अथवा उपदेशप्रधान उपन्यास आते हैं जिनका महत्व की घटनाओं को संयोगबहुलता में निहित था।

प्रेमचन्द ने हिन्दी औपन्यासिक विधा को एक नवीन दिशा प्रदान की। उन्होंने उपन्यास के क्षेत्र में घटनाओं की केन्द्रीयता को तोड़ा तथा उपन्यास के केन्द्र में मनुष्य को, उसके जीवन संघर्ष को

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

उसके मानसिक द्वन्द्व को प्रतिष्ठित किया। अतः प्रेमचन्द ने उपन्यास को अय्यारी एवं चमत्कारपूर्ण जासूसी उपन्यास की दुनिया से निकालकर ~~काल्पनिक~~ वास्तविक यथार्थ की दुनिया में प्रतिष्ठित किया।

प्रेमचन्द ने उपन्यास का आधार समाज को बनाया। समाज में बिखरे जीवन संघर्ष को उपन्यास की कथा वस्तु का केन्द्रीय मुद्दा बनाया। जीवन का द्वन्द्व कथानक का द्वन्द्व बना और उपन्यास को जीवन यथार्थ से जोड़ा। प्रारम्भ में प्रेमचन्द ने अनेक सामाजिक समस्याओं पर केन्द्रित उपन्यास रचे यथा 'निर्मला' अनमेल विवाह की समस्या पर, 'गोदान' बढ़ते औद्योगीकरण के खतरों पर, कर्मभूमि समाज में व्याप्त

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फोन ...011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com
Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धार्मिक आडम्बरों के खिलाफ; जैसे प्रेमाश्रम, रंगभूमि, इत्यादि। किन्तु 'गोदान' उनकी महती कृति है अन्य कृतियों में प्रेमचन्द समस्या यथार्थवादी ढंग से उठाते हैं किन्तु समाधान देते-देते आदर्शवादी हो जाते हैं। किन्तु प्रेमचन्द का पूर्णतः यथार्थवादी उपन्यास 'गोदान' है जहाँ अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं का दमन करता हुआ किसान होरी अन्ततः नए युग के आगाज पर अपना दम तोड़ देता है, होरी मर जाता है। गोदान पूरी तरह एक यथार्थवादी उपन्यास के रूप में उभरता है जो हिन्दी उपन्यास की यात्रा में एक नया मोड़ प्रस्तुत करता है।

गोदान अपने शिल्प और उद्देश्य के स्तर पर सर्वथा नवीन आयाम लेकर प्रस्तुत होता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

> लेखक दृश्यात्मक - परिदृश्यात्मक प्रश्न विश्वगत बातचीतों का सहारा लेकर घटनाओं के संवाद में, पात्रों के अन्तर्द्वन्द से एक सम्पूर्ण कथाचित्र उपस्थित करता है जहाँ लेखक अधिकारतः अनुपस्थित होता है।

इसका कथानक भी जीवन का यथार्थ समस्याओं को उठाता है। यह भारतीय किसान की त्रासदी का वर्णन है। एक तीन बीघे की होरी की जोत का स्वामी होरी जिसकी महत्वाकांक्षा की परिणति उसके द्वार पर बंधी गाय है। लेकिन उसे गाय भी क्या परिस्थितियाँ इतना मजबूर कर देती है कि उसकी जमीन और घर छिन जाते हैं और वह एक मजदूर की भांति मौत मर

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जाता है। प्रेमचन्द एक यथार्थवादी, आदर्शोन्मुख एवं घोर कारुणिक नोट के साथ उपन्यास को अन्त करते हैं — "महाराज न घर में गऊ है न पैसा पे जो है बस यही है यही इसका गोदान है।

इसके साथ प्रेमचन्द तत्कालीन राजनीति, अर्थव्यवस्था, स्त्री-पुरुष संबंधों की भी चर्चा करते चलते हैं। निष्कर्ष: वर्तमान के साथ भविष्य की चिंता साफ झलकती है।

गोदान ग्रामीण जीवन के महावृतान्त का उपन्यास बन जाता है जो कर्ज के बोझ तले दबे किसानों धर्म, जाति और बिरादरी के बंधनों में जकड़े व्यक्ति और व्यवस्था के शोषण चक्र में पिसते भारत के अभागनीय अंत की कहानी है। जो निश्चय ही हिन्दी उपन्यास यात्रा का एक महत्वपूर्ण मोड़ है

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष —011-27604128 0-9313988616 0-9810316396 ई-मेल/E-mail : drishti thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

जिसने एक नए युग के आंचलिक औपन्यासिक विधान, एक नीन यथार्थवादी दृष्टि का मार्ग प्रशस्त किया था। इनकी नीतें पर आगे चलकर 'मैला आंचल', 'बलचनामा', 'बूंद और समुद्र', जैसे आंचलिक उपन्यासों की नहीं पी लौं शहरी और ग्रामीण जीवन का भी कई मात्र जीवन की महागाथा कहने वाले उपन्यास यथा 'रागदरबारी', आदि की भी अवधारणा विचार हुई।

फिर तो मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों से लेकर और यथार्थवादी, मार्क्सवादी, ऐतिहासिक उपन्यासों की झड़ी लगा गई। जैनेन्द्र हिन्दी उपन्यास की धारा को मानो नीत नवीन नीति नायिका प्रदान किए। यह धारा लगातार चल रही है। पर गोदान ...

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

वह नीत है। जिसपर चलकर हिन्दी उपन्यास के केन्द्र में मानव, मानवीय समाज की समस्याओं, मानवीय अन्तर्द्वन्द्व एवं मानवीय परिस्थितियों की ~~प्रतिष्ठा~~ प्रतिस्थापना हुई है।

36

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
सम्पर्क — 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

व्याख्या

(क) सतगुरु की महिमा — — — मारा बाण

मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन

(1) मानवीय जीवन एवं राष्ट्रीय जीवन का वह आंदोलन था जिसने मानव को काव्य की धुरी में केन्द्रित किया यद्यपि केन्द्र में ईश्वर है परन्तु ईश्वर के साथ जुड़ा हुआ मनुष्य ईश्वर से अभिन्न नहीं है इसलिए परोक्ष रूप से मानव केन्द्र में है। मानव को ईश्वर के साथ एकाकार भक्ति ने किया तथा उत्तर भारत में भक्ति का प्रथम प्रस्फुटन कबीर के माध्यम से हुआ जिन्होंने समाज में परिव्याप्त ऊँच-नीच के बंधन को ध्वस्त साबित किया तथा ईश्वर से एकाकार संतों के अनुभव को कविता में केन्द्रीय स्थान प्रदान कराया।

व्याख्याओं में शीर्षक आदि का प्रयोग लाभदायक हो सकता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन सन्त कवियों की कविता में गुरु का महत्व अत्यन्त व्यापक है क्योंकि गुरु ही इस अनंत दृष्टिगोचर जगत के रहस्य का ज्ञान कराता है। इसी गुरु के महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कबीर कहते हैं कि सतगुरु का महत्व अनन्त है जिसकी कोई सीमा-रेखा नहीं क्योंकि सतगुरु ने सीमा रेखा में न बाँधे जा सकने वाले अनन्त, अगोचर, अकथनीय, सर्वत्र परिव्याप्त परब्रह्म के दर्शन करा दिए हैं। ऐसा करने के लिए उन्होंने अपने सत्उपदेश से मेरे ईश्वर की सत्ता का बोध कराने वाले ~~अनन्त~~ अनन्त ज्ञान चक्षुओं को खोल दिया है। और उसका यह उपकार ऐसा महान है कि इसकी

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

को शब्दबद्ध नहीं किया जा
सकता ।

सतगुरु ने परम ब्रह्म से
साक्षात्कार कराने हेतु ऐसा ज्ञान के
शब्द, रूपी ऐसा बाण मारा है,
कि मेरी वाणी अवरुद्ध हो
गई और बावला हो गया, तथा
कान बहरे हो गए,
पावों से पंगु हो गया ।
अर्थात जब साधक को को
ईश्वर का साक्षात्कार एक बार
आनन्द से हुआ तो वह
बावला हो गया अर्थात उसकी
कर्म ज्ञानेन्द्रियां अन्तर्मुखी-
हो गई तथा वह सामान्य जीवन
से ऊपर कार्य करने लगा ।

कबीर के यहाँ गुरु का
बड़ा महत्व है जैसे उपर्युक्त पंक्तियों
में देखा जा सकता है । यह विशेष

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष —011-27604128 0-9313988616 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.)

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

नाम (Name) .... विषय (Subject) .... तिथि (Date) ....

पता (Address) .... फोन नंबर (मोबाइल) ....

(कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। Please don't write anything in this space)

ध्यान देने योग्य यह बात है कि कबीर ने गुरु का विशेषण 'सत' जोड़ा है क्योंकि सतगुरु ही मनुष्य को ईश्वर की परमसत्ता का बोध करा सकता है। क्या गुरु तो स्वयं ही डूब रहा है वह शिष्य को क्या उबारेगा — 'अंधा अंधा ठेला दोनों कूप पड़न्त',

'अंनत' शब्द के बार बार प्रयोग ने दोहे में एक लयात्मकता और सौन्दर्य की सृष्टि की है।

भाषा सरल और प्रवाहमयी है।

(13)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

(च) – कई दिनों तक - - - शिकस्त ।

नागार्जुन जनता के कवि हैं जिन्होंने लोक जनता के सामान्य सुख-दुख को अपनी कविता का मुख्य आधार बनाया। ~~जनता सर्व~~ दलित, गरीब एवं पिछड़े के उन्नयन, उनकी स्थिति और उनकी एवं समाज की उन्हें मूलभूत आवश्यकताएँ की मुहैया ना करा पाने की विफलता उनके काव्य की केन्द्रीय विषयवस्तु रही। अकाल के बाद, इन पंक्तियों के द्वारा हिंदी की कविता में ~~समसामयिक~~ नागार्जुन ने मानवीय संवेदना के उस पहलु को उकेरा है जो अकाल के समय मानवता को झकझोर देता है।

कई दिनों तक चूल्हा रोता रहा, चक्की उदास रही क्योंकि

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तो चूल्हे पर खाना पका न चक्की में अनाज पीसा गया। अकाल के उन दिनों में चूल्हे के पारम्परिक संगी साथी अन्न, बर्तन, आग इसके साथ नहीं थे इसलिए एक कानी कुतिया उसके पास सोती रही। छिपकली ने उसे दुत्कारा नहीं क्योंकि वहाँ भोजन नहीं था। उन दिनों छिपकलियों और चूहों को भी जीवन स्थिति के संकट से जूझना पड़ा।

इस कविता की खास बात है कि अकाल का कोई पारम्परिक चित्र नहीं है जहाँ भूख नाच रही है, भूख से बिलखते बच्चे हैं अपितु निर्जीव वस्तुओं के मानवीकरण तथा मानव के घरेलू जीवन के संगी छोटे-छोटे जानवरों के माध्यम से एक घर के निस्तब्ध, चुप, गुप्त वातावरण को उभारा गया है। जिसका जीवन चक्र है

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

क्योंकि जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं को लेकर बालक अभिशप्त है, इसमें ताकत मौजूद नहीं है पर ताकत की संगी-साथी मौजूद होकर उसकी नपांवट दिखाते जा रहे हैं। यह पारम्परिक चित्र इसलिए नहीं है क्योंकि यह आकाल परिस्थितियाँ जनित था कि प्राकृति जनित नहीं है वरन व्यवस्था जनित है जहाँ मनुष्य को दो वक्त की रोटी नसीब नहीं है यह चित्र किसी गरीब घर का चित्र है, जहाँ अकाल कुछ दिन वर्षों में नहीं दिनों के अन्तराल पर उपस्थित होते हैं। जिसे 'कई दिनों तक' के माध्यम से बार-बार दर्शाया गया है।

जहाँ, स्वच्छ, भाषा में मनुष्य की अनुभूत तर्क के आधिकार के प्रति आस्था की-

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भक्तों को कालिमा के विस्तृत चित्र द्वारा उकेरा गया है।

बिम्बधर्मिता गजब की है जो चार पंक्तियों में एक कठोर पाँच प्रसार एक अद्भुत विराट के पतों को दर्शाता है।

(14)

(ज) मेरी भव बाधा ... उद्धृत पंक्तियाँ

बिहारी रीतिकाल के रीतिसिद्ध काव्यधारा के प्रमुख प्रतिनिधि कवि हैं जिन्होंने छोटे-छोटे दोहों में अनेकविध अर्थों को ध्वनित करने तथा काव्योक्तियों को रचनाबद्ध किया है। बिहारी सतसई का प्रत्येक दोहा 'देखन में छोटे लगैं' पर 'घाव करैं गंभीर'।

प्रस्तुत दोहे में कवि बिहारी राधिका से अपनी भव बाधा हरने की मनोरथ कर रहे हैं कि नागर में रहने वाली चतुर राधा

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि
दृष्टि
दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

जिनके तन की छाया पड़ने से कृष्ण का मन उमंग से भर उठता है वे मेरी बाधाएँ हरें।

बिहारी के दोहे का अन्य अर्थ है कि हे (श्री) राधा नागरि मेरी भव बाधा हरो जिनकी कृपादृष्टि पड़ने से हृदय का कलुष समाप्त हो जाता है तथा मन निर्मल हो जाता है।

अगले दोहे में बिहारी कहते हैं कि हे सुन्दर राधा तू श्री कृष्ण के हृदय में उर्वशी के समान बसी है तथा तेरे रूप सौन्दर्य पर कृष्ण स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी को भी न्यौछावर करते हैं।

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

प्रथम दोहे में श्लेष का चमत्कार है जहाँ एक ही दोहे से नाना अर्थ ध्वनित हो रहे हैं तथा दूसरे दोहे में यमक एवं दोहा पढ़ते समय बलाघात परिवर्तित से अर्थ परिवर्तन का चमत्कार है।

दोनों दोहों में कवि बिहारी की काव्य कला का उत्कृष्ट रूप दृष्टिगोचर होता है।

भाषा ब्रज है जिसको अपनी सभी शक्तियों के साथ प्रस्तुत है।

(12)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

"मुझे - - - नहीं थी।"

(3) (क) मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक कालिदास के जीवन के द्वन्द्व के द्वारा आधुनिक कवि के जीवन के द्वन्द्व को वाणी देता है।

कालिदास भौतिक अभाव में पलता है और उस अभाव में उसके पास मानसिक शांत की कमी नहीं है उसे बिना शर्त प्रेम देने वाली मल्लिका है, हिमालय प्रदेश का सुन्दर, मनोहर, प्राकृतिक वातावरण है जो उसकी रचनाओं को प्रेम और प्रकृति के रंगों से सींचता है। पर कालिदास भौतिक अभावों की पूर्ति हेतु राजकवि का पद स्वीकार कर लेता है तभी मल्लिका पीछे छूट जाती है। महत्वाकांक्षा उसे कवि से राजनेता बना देती

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष ~011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

और वह पूरी तरह विफल हो जाता है। अपने नए जीवन से विरक्त होकर वह पुनः पुराने जीवन में लौटता है तथा अपनी स्थिति का औचित्य, अपने विरत रहने का औचित्य मालविका को बताता है कि उसे डर था कि अभाव और कठिनता से भरा जीवन जीने के बाद जब वह राजकीय प्रतिष्ठा और सम्मान का जीवन जीने लगेगा तो वह प्रतिष्ठा और सम्मान उसकी दबी हुई महत्वाकांक्षाओं को जगा देगा और फिर कालिदास बदल जाएगा और ऐसा हुआ था। कालिदास ने कवि कर्म का अतिक्रमण कर राजनेता बनने का प्रयास किया जिसमें वह और विफल रहा।

उपर्युक्त पंक्तियों में जीवन में भौतिक सुविधाओं के मर और

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अभाव तथा नागरिक दायित्वों के भाव और अभाव के बीच झूलते हुए संवेदनशील हृदय के द्वन्द्व को उभारा गया है।

वस्तुतः मोहन राकेश यहाँ कवि कालिदास की ऐतिहासिक स्थिति का आधार बनाकर नवीन कवि की जीवन द्वन्द्व को लक्षित कर रहे हैं। यदि कवि प्रतिष्ठा, पद को स्वीकार करता है तो उसकी आत्मा का हनन होता है और यदि वह अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनता है तो इसे लोकजीवन में बड़े आर्थिक एवं सम्मानगत अभावों को झेलना पड़ता है। कवि कर्म के इसी द्वन्द्व को प्रस्तुत पंक्तियों में रेखांकित किया गया है।

प्राचीन वातावरण के निर्माण के

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"फिर भाषा को तत्सम प्रयोग रखा गया है। अतः कालिदास की अलंकारिता नवीन वाले की अलंकारिता है।

14

(ध) 'जिस प्रकार आत्मा - - - मानते हैं।'

हिन्दी आलोचना की यात्रा में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक मानक है जिनकी कसौटी पर आगे के आलोचकों की आलोचनाओं को कसा जाता है। इसके साथ ही वे श्रेष्ठ निबन्धकार भी हैं। इन निबन्धों में भी उनका आलोचक रूप दृष्टिगोचर होता है इसलिए 'वे कविता क्या है' में कविता को परिभाषित करते समय आलोचनात्मक उपकरणों का प्रयोग करते हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत चिन्तामणि के भाग विषयक निबन्धों में 'कविता क्या है' निबन्ध में कविता को भिन्न - भिन्न

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

भावनाओं से परखा गया है तथा
कविता के उद्देश्य तथा सच्ची
कविता और दिखावटी कविता में
अंतर स्थापित किया गया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं
कि जिस प्रकार जब ~~हमारी~~
हम ज्ञान प्राप्त कर जाते हैं, तब
हम सत्य को शोध लेते हैं,
जीवन एवं सत्य का वास्तविक
ज्ञान मिल जाता है जब एक
पृथक मनुष्य के रूप में हम अपनी
सत्ता का अतिक्रमण कर सम्पूर्ण
विराट चैतन्य के अंश के रूप में
स्वयं को पहचान लेते हैं तब
हमारी आत्मा मुक्त हो जाती है
और — हमारी यह दशा ज्ञानदशा
कहलाती है। इसी प्रकार जब-
हम किसी काव्य का रसास्वादन
करते हुए उस साधारणीकरण की
उस उच्च दशा को प्राप्त कर

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ॰ मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फोन : 011-27654128, 9313988616, 9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com
Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

सी है जहाँ हम अपने स्वत्व का प्रतिक्रमण कर काव्य की सत्ता में विलीन हो जाते हैं। हम अपने को भूल जाते हैं तथा काव्य की विषयवस्तु के साथ एकाकार हो जाते हैं तब हृदय अपनी साधारण सीमाओं को तोड़ देता है। उसके संकल्प-विकल्प समाप्त हो जाते हैं और हम मुक्त हो जाते हैं। मुक्तावस्था को यह दशा रसदशा कहलाती है।

हृदय को अपने सामान्य धर्म से अलग कर एक स्तर के साथ 'विलीन' की भावना के लिए काव्य की रचना होती है। क्योंकि काव्य के द्वारा ही मनुष्य उच्चतर भावों की भावदशा को प्राप्त होता है।

यह काव्य वस्तुतः मनुष्य की वाणी का शब्द विधान है और मनुष्य के हृदय की मुक्तावस्था तक ले जाती है।

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फ़ोन: 011-27604178, 9311988616, 9810316396 ई-मेल (E-mail): drishti_thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आचार्य शुक्ल के अनुसार यह साधना भावयोग कहलाती है तथा यह किसी भी कोटि पर कर्मयोग और ज्ञानयोग से कम नहीं है क्योंकि इससे मनुष्य का हृदय विस्तृत होता है तथा वह अपने पारस्परिक राग-द्वेष को भुलाकर ऊपर उठ जाता है जहाँ वह सम्पूर्ण सृष्टि के सुख में सुखी और दुख में दुखी होता है। वह वस्तुतः अपनी पारस्परिक सीमाओं को तोड़ देता है।

रामचन्द्र शुक्ल ने बड़े ही सुलझे हुए ढंग से अपनी बात कही है जिसमें उनका शीलरूप सहज ही दृष्टिगोचर होता है।

भावयोग को कर्मयोग और ज्ञानयोग के समकक्ष रखकर कवि कर्म की महत्ता को प्रतिष्ठित किया गया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

शैली सहज एवं धारित स्पष्ट है
भाषा प्रवाहमयी एवं प्रभावशाली है

(14)

प्र) : मेरे नाम राजनीति — — — भर रखो।

सांप्रदायिक 'महामोहर' भारतीय राजनीति की उन नवीन प्रवृत्तियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है जिन्होंने राजनीति को धर्मनीति के पद से च्युत कर स्वार्थनीति में परिणत कर दिया है। चुनावी राजनीति, दाँव पेच, चुनाव जीतना ही लोकतन्त्र का एकमात्र मूल्य बनकर रह गया ताकि 'आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक न्याय' की संवैधानिक परिकल्पना व्यवहार में मात्र कागजों की पंक्ति बनकर रह गई है।

वस्तुतः पंक्ति - 'दा साहब' का संवाद है जो बातें तो बड़ी

पता : 641, प्रथम तल, डॉ॰ मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष —011-27604178, 0-9313888616, 0-9810316396 ई-मेल/(E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

बातें करते हैं किन्तु जब
वास्तविक कार्य करने की बारी
आती है तब ऐसी-ऐसी कुटिल
चालों द्वारा अपने शत्रुओं को
निरस्त करते हैं कि पक्ष व
विपक्ष दोनों के सिद्धान्त पर चकित
रह जाता है।

ठा. साहब ऐसी ही बड़ी बड़ी
बातें कर रहे हैं कि राजनीति
उनके लिए धर्मनीति है और
यदि उनके साथ चलना है तो
ठा. साहब के कहे अनुसार चलना
होगा, कर्म पर दृष्टि रखनी होगी
जय पर नहीं, दूसरों को
बड़ी-बड़ी बातें बताने वाले और
कूट राजनेता स्वयं पर ये
सिद्धान्त लागू नहीं करते तथा
दृष्टि केवल फल पर लगाए
रखते हैं।

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फोन – 011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com
Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

राजनीतिक नेताओं के दोगलेपन पर व्यंग्य किया है।
उपन्यास में नाटकीय लेखन शैली का (लेखक) लेकर मन्नू भण्डारी ने व्यंग्य को धारदार बनाया है।

सीधी सीधी बात से मन्नू भण्डारी सम्पूर्ण नाटक में भारतीय राजनीति के दाव-पेंचों को खोलकर रख देती है।

12

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

स्कन्दगुप्त 'इतिहास' नहीं 'वर्तमान' की चिन्ता का नाटक है। स्पष्ट करें।

(5)

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित स्कन्दगुप्त नाटक ऐतिहासिक कथावस्तु को आधार लेकर रचा गया नाटक है जिसमें गुप्त साम्राज्य के महान सम्राट स्कन्दगुप्त की कहानी एवं उनके द्वन्द्व को रेखांकित किया गया है।

प्रसाद के नाटक की विषयवस्तु भले ही ऐतिहासिक हो लेकिन उसकी दृष्टि का कारण उनका वर्तमान बोध है। एक रचनाकार के महत्व दायित्व से अनुप्राणित उनकी रचनाएं अपने युग की परिस्थितियों की दृष्टि एवं संवाद की उपज है। जिस समय प्रसाद नाटक रच रहे थे उस समय

दृष्टि The Vision

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भारत एक ~~स~~ गुलामी के दौर से गुजर रहा है। अठार 18वीं सदी में जब अंग्रेजों का पर्दापण एक सि व्यापारी से बढ़कर एक राजनीतिक सत्ता के रूप में भारत को इतना अन्य समय से भारत का स्वर्ण स्वाभाग्य आक्रांत हो गया। पहले अंग्रेजों ने ~~नियोजक~~ कर, व्यवसायिक जमीनदारी के अधिकारों का प्रयोग कर भारत को लूटा फिर अपने राजनीतिक बल का प्रयोग कर भारत को ध्वस्त किया तथा यहाँ की पारम्परिक आर्थिक, राजनीतिक प्रणाली को ध्वस्त कर दिया। इसके बाद भारतीयों पर राज करने के लिए अंग्रेजों के पास आर्थिक अधिकार तथा भारतीय सांस्कृतिक पर भी हो गई

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष —011-27654128 0-9313988616 0-9810316396 ई-मेल(E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

प्रणाली को ध्वस्त किया। भारत की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, इतिहास, पहनावे, उनके पोशाक खान-पान को निकृष्ट साबित कर भारतीयों को मानसिक गुलामी तथा सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के अधीन लाया। अपने इन्हीं इरादों की पूर्ति हेतु ~~कर्जन~~ कलकत्ता दीक्षांत समारोह में भाषण देता है तथा वाईट मैन बर्डेन थ्योरी को प्रसार करता है कि भारत में न कोई सभ्यता है, न संस्कृति न इतिहास तथा भारतीयों को सभ्य करना अंग्रेज़ों का काम है।

अतः जैसे तत्कालीन समाज के लोग प्रतिबद्ध साहित्यकारों ने अंग्रेज़ों की इस कुटिल चाल को नाकामयाब किया। भारतीय अतीत का गौरव गान किया, भारतीयों को

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आहिता से इन्हें परिचित कराया। पुनर्जागरण की लहर सारे देश में दौड़ गई जिसकि केन्द्र में था भारत का अतीत - जहाँ भारत एक बड़ी शक्ति था तथा भारतीय एक शक्तिशाली थे।

इन्हीं परिस्थितियों में जयशंकर प्रसाद ने स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी और ऐतिहासिक नाटकों की रचना की जिसका कथानक तो ऐतिहासिक था किन्तु चिंतन समकालीन थी।

स्कन्दगुप्त में गुप्त साम्राज्य का दूर-दूर तक विस्तार है किन्तु साम्राज्य बाह्य एवं आंतरिक खतरों एवं विद्रोहों के कारण आक्रांत है। स्कन्दगुप्त अपने बाहु बल से बाहरी पुष्यमित्रों एवं हूणों के आक्रमण को तो

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

गिरफ्त कर लेता है लेकिन अन्ततः
के षड़यन्त्रों को शान्त करके भी
विक्षुब्ध हो जाता है।

प्रसाद जी के द्वारा भारत की
बाहरी और आन्तरिक समस्याओं से
टकराते हैं। भारत के ऊपर एक
बाहरी शक्ति 'अंग्रेज' काबिज है
तथा भारत का राजनीतिक, आर्थिक
और सांस्कृतिक दोहन कर रहे हैं
(स्कन्दगुप्त में हूणा अंग्रेजों जैसा
आगह, अमानवीय आचरण करते
हैं जिसका मुकाबला स्कन्दगुप्त करता
है) पर भारतीय जनमानस
स्कन्दगुप्त की भाँति द्वन्द्व में है
कि उसे अधिकार नहीं चाहिए
वह शांतिप्रिय है। ऐसे अधिकार
को लेकर सत्ता अपना करें
उसका वह त्याग करेगा किन्तु
आगे वह अपने अधिकार
प्राप्ति नहीं करेगा तो वह

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फोन : 011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail): drishti_thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दृष्टि The Vision

अपने ऊपर आश्रित जनता के अधिकार और किसी भी प्रकार सुरक्षित नहीं कर पाएगा।

इसी प्रकार यदि वह ~~अल्पसंख्यक~~ को शासन प्रक्रिया को सौंप देगा तो कालान्तर में ~~अखण्ड~~ साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो जाएगा।

प्रसाद ~~कहना~~ चाहते हैं कि शांति, अन्तर्द्वन्द्व से रहित होकर प्रत्येक भारतीय को अपने आपसी बैर-भाव भुलाकर एकता से आततायियों से लड़ना चाहिए तथा उनके द्वारा प्रदत्त किसी भी प्रकार की गुलामी को अस्वीकृत कर देना चाहिए।

प्रसाद ~~अल्पसंख्यक~~ का चन्द्रगुप्त नाटक में स्वतंत्रता के भाव से इन्हीं भावों को तथा अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा मिलती है।

यहाँ तक ठीक है, भावार्थ अनुच्छेदों में क्यों नहीं स्पष्ट करें॥

45

पता : 641, प्रथम तल, डॉ॰ मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फ़ोन — 011-27658178 0-9313888816 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)